(राग: यमन - ताल: त्रिताल) नतमनहरणा तूं त्राहि मां जयकुमतिसुहनन ।।ध्रु.।। द्विलोचन सुंदर

पद ८

पाणी। झळकति कुंडल कर्णी। स्वसुख कारण भवहर चरण ते

गाति मुनि निशिदिनिं अघहरण। जयकुमतिसुहनन ।।१।। जय

सर्वस्तव्या अखिलेशा। जो अगम्या चतु:षष्ट अष्टादशा। कोपे

नाकभूपादि कांपति तुज। देवत्रय स्तविती पंकजनयना।

जयकुमतिसुहनन ।।२।। गुरुराज माणिकप्रभुराजा। अव्यया अज

निराकारा। पाररहित अपार पापहारी। तारी मनोहरा भवविदारा।।३।।